

dainikbhaskar.com

दैनिक भास्कर, जयपुर

सोमवार, 12 जून, 2017

लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्टेशन में अगले 5 वर्षों में 1.2 करोड़ नौकरियों के अवसर

वर्तमान समय में लगभग सभी छोटी या बड़ी कंपनियों में लॉजिस्टिक्स की भूमिका बढ़ी है। वहीं अन्य देशों की अपेक्षा

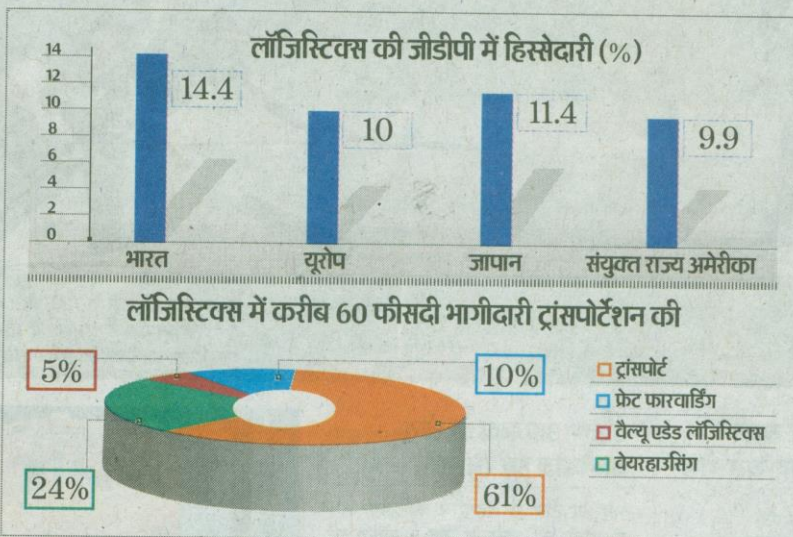
भारत में लॉजिस्टिक्स की जीडीपी में हिस्सेदारी भी ज्यादा है। इसलिए इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं बढ़ी हैं।

• लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस में 20 स्थान की बढ़ोतरी हुई है भारत की 2014 से 2016 के दौरान

शुरुआत में लॉजिस्टिक्स शब्द का उपयोग मिलिट्री सप्लाय के लिए किया जाता था, लेकिन 1990 के दशक में ग्लोबलाइजेशन के शुरुआती दौर में इस शब्द को बिजनेस के क्षेत्र में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने लगा। लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट को सप्लाय चेन मैनेजमेंट भी कहा जाता है। राँ मटीरियल से प्रोडक्ट बनाने और फिर ग्राहक तक पहुंचाने की पूरी प्रक्रिया में शामिल गतिविधियां लॉजिस्टिक्स या सप्लाय चेन मैनेजमेंट कहलाती हैं। वर्तमान में छोटे या बड़े दोनों तरह के बिजनेस में लॉजिस्टिक्स की उपयोगिता बढ़ी है। ऐसे में इस क्षेत्र में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार अगले 5 वर्षों में लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्टेशन के क्षेत्र में 1.2 करोड़ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर बनेंगे।

देश के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में ट्रांसपोर्टेशन की 50 फीसदी से भी ज्यादा हिस्सेदारी है। इसके बाद लगभग 25 फीसदी हिस्सेदारी वेयर हाउस की है। देश की जीडीपी में लॉजिस्टिक्स सेक्टर की 14.4 फीसदी हिस्सेदारी है, जो अन्य देशों की अपेक्षा ज्यादा है। वर्ल्ड बैंक की लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स 2016 की रिपोर्ट में भारत 34वें स्थान पर आ गया है। 2014 में भारत का 54वां स्थान था। इस रिपोर्ट में लॉजिस्टिक्स इंडेक्स की 2020 तक 15 से 20 फीसदी की सालाना दर से बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। ऐसे में इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ने की संभावनाओं को मदद मिलेगी।

लॉजिस्टिक्स में मुख्यतः खरीद, ट्रांसपोर्टेशन, स्टोरेज और प्रोडक्ट के डिस्ट्रीब्यूशन को मैनेज करना होता है। किसी भी ऑफिस या कंपनी में मटीरियल सप्लाय की जिम्मेदारी लॉजिस्टिक्स कंपनी की होती है। लॉजिस्टिक्स मैनेजर की यह जिम्मेदारी होती है कि वह कंपनी के अन्य अधिकारियों के साथ सामंजस्य स्थापित करे और इसके साथ ही यह सुनिश्चित करे कि प्रोडक्ट सही समय पर सही जगह डिलीवर किया गया या नहीं। साथ ही इसके स्टोरेज की व्यवस्था आदि की जिम्मेदारी भी होती है।



किसी भी बैकग्राउंड के छात्र बना सकते हैं कैरियर

किसी भी स्ट्रीम से 50 फीसदी अंकों के साथ बारहवीं करने वाले छात्र इससे संबंधित बैचलर डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। देशभर के विभिन्न संस्थानों में लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट, सप्लाय चेन मैनेजमेंट, ट्रांसपोर्टेशन इकोनॉमिक्स, ट्रांसपोर्टेशन कैरियर मैनेजमेंट कोर्स कराए जाते हैं। इसके अलावा पोस्टग्रेजुएट स्तर पर इसके कई कोर्स कराए जाते हैं। किसी भी स्ट्रीम से बैचलर डिग्री करने के बाद छात्र लॉजिस्टिक्स के एमबीए या सप्लाय चेन मैनेजमेंट के एमबीए या पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। मास्टर डिग्री या पीजी डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश के लिए विभिन्न संस्थानों में कैट, मैट, जैट, एटीएमए जैसे राष्ट्रीय स्तर के टेस्ट का वैलिड स्कोर जरूरी होता है। इसके वैलिड स्कोर के आधार पर छात्रों को पर्सनल इंटरव्यू या ग्रुप डिस्कशन के लिए शॉर्टलिस्ट किया जाता है।

लगभग सभी कंपनियों में जरूरत होती है लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल की

मौजूदा समय में लगभग सभी कंपनियों में लॉजिस्टिक्स से संबंधित काम किए जाते हैं। ऐसे में लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट प्रोफेशनल के लिए इन कंपनियों में जॉब के अवसर हैं। साथ ही कूरियर कंपनियों, मैनुफैक्चरिंग यूनिट, वेयर हाउस आदि में लॉजिस्टिक्स मैनेजर या सप्लाय चेन मैनेजर की आवश्यकता होती है। वहीं समुद्र के रास्ते ट्रांसपोर्टेशन बढ़ने से यहां भी इन प्रोफेशनल के लिए नौकरी के मौके बढ़े हैं।

1.60 लाख से 2.40 लाख रुपये सालाना औसतन शुरुआती पैकेज

लॉजिस्टिक्स या सप्लाय चेन मैनेजमेंट प्रोफेशनल की सैलरी क्वालिफिकेशन और अनुभव के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। इस क्षेत्र में फ्रेशर को 1.60 लाख से 2.40 लाख रुपये का सालाना पैकेज मिल सकता है। हालांकि कुछ वर्ष के अनुभव के बाद पैकेज 30 से 35 हजार रुपये प्रति माह तक हो सकता है। बड़ी कूरियर कंपनियों या शिपिंग कंपनियों और मल्टीनेशनल में सैलरी पैकेज और भी ज्यादा होने की संभावना होती है।